अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2025) दिनांक : 14.08.2025

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) परिहार विशुद्धि–ज्ञान द्वार।

(ख) यथाख्यात चारित्र–परिणाम द्वार।

(ग) सूक्ष्म संपराय चारित्र–आकर्ष द्वार।

(घ) सामायिक चारित्र–उपसंपद्हान द्वार।

(ड़) छेदोपस्थापनीय–अन्तर द्वार।

(च) परिहार विशुद्धि–स्थिति द्वार।

(छ) सूक्ष्मसंपराय चारित्र–प्रवज्या द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) महाविदेह में कौन सा कल्प होता है? उसमें कितने कल्प अनिवार्य हैं?

(ख) किस दृष्टि से चारित्र के अनंत पर्यव कहे हैं?

(ग) पांच कर्मों की उदीरणा किस गुणस्थान में होती है?

(घ) किन गुणस्थानों की चारित्रिक विशुद्धि एक दूसरे से षट्स्थानपतित है?

(ड़) प्रथम चार चारित्र का क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग ही है? क्यों?

(च) परिणाम किसे कहते हैं?

(छ) यथाख्यात चारित्र में कितने व कौन से कर्मों का वेदन होता है?

(ज) कौन से चारित्र वाले स्थितकल्पी ही होते हैं? क्यों?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र की स्थिति द्वार में अनेक जीवों की अपेक्षा स्थति 250 वर्ष व उत्कृष्ट 50 लाख करोड सागर किस अपेक्षा से है?

(ख) संयम स्थान में जो नीचे से ऊपर 1,2,3,4,4 अंक दिए गए हैं, वे किसके सूचक हैं? स्पष्ट करें।

(ग) सन्निकर्ष द्वार में सूक्ष्मसंपराय चारित्र सूक्ष्मसंपराय से एक स्थान पतित-अनंतगुणहीन, अनंतगुण अधिक किस अपेक्षा से कहा है?

(घ) कल्प किसे कहते हैं? कल्प कितने हैं उनके नाम लिखें। कल्पातीत कौन होते हैं?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) कषायकुशील – परिणाम-स्थिति द्वार।

(ख) निर्ग्रंथ – अंतर द्वार।

(ग) प्रतिसेवना – आकर्ष द्वार।

(घ) पुलाक – ज्ञान द्वार-अध्ययन।

(ड़) बकुश – गतिस्थिति पद्वी द्वार।

(च) स्नातक – स्थिति द्वार।

(छ) निर्ग्रंथ – उदीरणा द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के उत्तर लिखें– 7

(क) प्रतिसेवना का प्रवज्या द्वार लिखें?

(ख) बकुश बकुशपन छोड़कर प्रतिसेवना में कब आता है?

(ग) निर्ग्रंथ के आकर्ष द्वार में अनेक भवों में उत्कृष्ट पांच बार किस अपेक्षा से बताए गए हैं?

(घ) अनेक जीवों की अपेक्षा पुलाक निर्ग्रंथों का समय अंतर्मुहूर्त लिया है, इसका तात्पर्य क्या है?

(ड़) चारित्र पुलाक किसे कहते हैं?

(च) पुलाक लब्धि में जीव काल नहीं करता फिर उसकी गति किस अपेक्षा से बतायी गयी है?

(छ) अप्रतिसेवी का क्या तात्पर्य है?

(ज) बकुश में समुद्घात कितने व कौन से पाते हैं?

गीतिका-नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) परंपरा से दिये जाने वाले दृष्टांत में पुलाक व बकुश को किनकी भांति बताया है?

(ख) छह निर्ग्रंथ किन-किन गुणस्थानों में पाए जाते हैं?

(ग) भगवान ने किसे मिथ्यात्वी कहा है? यह किस सूत्र में कहा है?

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) सांभल.....जोय।

(ख) छट्ठे.....नी होय।

(ग) मासी.....आलोय।

(घ) हय रूप.....जोय।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–द्वीपकुमार व उदधिकुमार का दण्डक कौन सा? ***अथवा*** पांच कोटि त्याग। 2

(ख) चतुर्भंगी–आश्रव के 20 भेद ***अथवा*** सत्रहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–बीसवां बोल ***अथवा*** पच्चीसवां बोल। 4

(घ) तत्त्वचर्चा–विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्त्व ***अथवा*** छह द्रव्यों में रूपी-अरूपी। 3

(ड़) कर्मप्रकृति–शुभ नाम भोगने के हेतु ***अथवा*** वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड)–परमात्म द्वार लिखें। ***अथवा*** द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव गुण द्वार में संवर व निर्जरा लिखें। 4

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय खण्ड)–पुण्य पाप द्वार लिखें। ***अथवा*** पारमार्थिक दान व उसके प्रकारों का वर्णन करें। 4

(ज) इक्कीस द्वार–अनाहारक ***अथवा*** अपर्याप्त का पूरा बोल लिखें। 4

(झ) बावन बोल–संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? ***अथवा*** बाईस परीषह किस-किस कर्म के उदय से? 4

(ञ) लघुदण्डक–ज्योतिष देवों में चंद्रमा व सूर्य की स्थिति लिखें। ***अथवा*** च्यवन द्वार लिखें। 4

(ट) पांच ज्ञान–वर्धमान अवधिज्ञान लिखें। ***अथवा*** अक्षरश्रुत के तीन प्रकारों को लिखें। 4